अर्वाचीन संस्कृत–साहित्य में चम्पू काव्य–एक पर्यवलोकन

सतीश प्रताप सिंह

शोधच्छात्र
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
E-mail - satishsingh.singh286@gmail.com

मानव एक सामाजिक प्राणी है। मानवीय अनुभूति और अभिव्यक्ति का मणि–कांचन योग जब वाणी के माध्यम से अपना चमत्कार प्रदर्शित करता है तब उसे वाङ्मय कहा जाता है। वैदिककाल से लेकर अद्यतन संस्कृत वाङ्मय की धारा अजस्र गति से प्रवाहमान है। राजशेखर ने काव्य को दो वर्गों में विभाजित किया है। **"इह हि वाङ्मयमुभयथा, शास्त्रं काव्यं च।।**[1]

शास्त्र से तात्पर्य ज्ञानात्मक साहित्य से एवं काव्य से रागात्मक साहित्य से है। संस्कृत काव्य मुख्यतः दो भागों में विभक्त है–दृश्य एवं श्रव्य काव्य।

दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधामतम्। दृश्यं तत्राभिनेयं तद्रूपारोपान्तु रुपकम्।।[2]

दृश्य काव्य के भी दो भेद हैं–रुपक और उपरुपक वस्तु नेता और रस की भिन्नता के आधार पर रुप के दस और उपरुपक के 18 भेद किये गये हैं।[3] शैली के आधार पर श्रव्य काव्य के तीन भेद किये गये हैं–**पद्य काव्य, गद्य काव्य और मिश्र काव्य–**

गद्यं पद्यं च मिश्रं च तत् त्रिधैव व्यवस्थितम्।[4] **गद्यं पद्यं च मिश्रं च काव्यादि त्रिविधं स्मृतम्।।**[5]

गद्य–पद्य की मिश्रित शैली में निर्मित काव्य मिश्र काव्य कहलाता है मिश्र काव्य को ही सुधी जन चम्पू काव्य कहते हैं–

मिश्र काव्यमिति प्रोक्तं गद्य–पद्य मिश्रणात्। तदेव कैश्चनाचार्यैश्चम्पूकाव्यमपि स्मृतम्।।[6]

चम्पू काव्य में गद्य एवं पद्य का मिश्रण सहज होता है। उसमें से किसी भी एक के प्रयोग में कवि का कोई दुराग्रह नहीं होता है–

मिश्रणं किन्तु चम्पवां तत्सहजं गद्यपद्ययोः। तयोरेकतरस्यापि प्रयोगे न दुराग्रहः।।[7]

चम्पू शब्द की व्युत्पत्ति चुरादिगण के गत्यर्थक 'चपि' धातु से 'उ' प्रत्यय लगाकर **'चम्पयति इति चम्पूः।** से हुई है। जिसका अर्थ है – गद्य–पद्य मिश्रित रचना। हरिदास जी भट्टाचार्य ने चम्पू शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है– **चमत्कृत्य पुनाति सहृदयान् विस्मयीकृत्य प्रसादयति इति चम्पूः।।**

अर्थात अन्य काव्यों की भांति चम्पू काव्य में भी सहृदय को चमत्कृत, विस्मित, पवित्र और प्रसन्न करने की अद्भुत क्षमता है। आचार्य विश्वनाथ ने चम्पू काव्य को परिभाषित करते हुए कहा है

Scanned with CamScanner

कि गद्य–पद्य से मिश्रित काव्य चम्पू काव्य है। **गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते यथा देशराजचरितम्।।**[8]

आचार्य दण्डी ने काव्यादर्श में (600ई) चम्पू का सर्वप्रथम विश्लेषण करते हुए कहा कि–

गद्यपद्यमयी काचिच्चम्पूरित्यभिधीयते।[9]

हेमचन्द्र और वाग्भट ने चम्पू काव्य की विशेषताओं में मिश्रशैली के अतिरिक्त साङक और सोच्छ्वास होना भी जोड़ दिया है– **गद्यपद्यमयी साङका सोच्छ्वासा चम्पूः।।**[10]

त्रिवेणी कवि की संज्ञा से विभूषित अभिराज राजेन्द्र मिश्र जी ने चम्पू काव्य को परिभाषित करते हुए कहा है कि–

पथिको हि यथा कश्चित् स्वेच्छया प्रचलन्पथि। विश्राम्येत्तरुसंस्थाने विश्राम्याथ पुनश्चलेत्।।
नैव पूर्वाग्रहः कोऽपि न च लक्ष्यं विलक्षणम्। प्रमाणं स्वरुचिश्चैव तस्य विश्रमयात्रयोः।।
चम्वामपि तथा कर्त्रा गद्यं पद्यं प्रयुज्यते। यथारुचि यथामात्रं पर्यायेण यथायथम्।।
स्वाभाविकं ततश्चम्वां गद्यपद्यविमिश्रणम्। चम्पूप्रकृतिरेवैतन्मिश्रणं गद्यपद्ययोः।।
साङाऽप्यथ च सोच्छ्वासा भवेच्चम्पूरियम्पुनः। उक्तिप्रत्युक्तिविष्कम्भूशन्यापीति च केचन।।
प्रबन्धमुक्तकाभ्याञ्च चम्पूरपि मता द्विधा। करम्भकञ्च विरुदं मुक्तकं जयघोषणा।।[11]

अर्थात जैसे कोई राहगीर स्वेच्छा से सफर करता हुआ किसी पेड़ की छाया में आराम करता है और आराम करके पुनः चलने लगता है। उसके आराम करने एवं चलने में उसकी स्वेच्छा होती है। पूर्वाग्रह एवं कोई विलक्षण लक्ष्य नहीं। उसी प्रकार चम्पू काव्य में भी रचनाकार स्वेच्छानुसार यथोचित गद्य–पद्य का प्रयोग करता है। यह गद्य–पद्य का मिश्रण स्वाभाविक होता है। गद्य तथा पद्य शैलियों का यह मिश्रण ही चम्पूकाव्य की प्रकृति है। चम्पू रचना साङक, उच्छवासों में विभक्त होती है। कुछ आचार्यों के मतानुसार उक्ति प्रत्युक्ति (आकाशभाषित) वाले विष्कम्भक से शून्य भी होती है। प्रबन्ध और मुक्तक भेदों की दृष्टि से चम्पू भी दो प्रकार की होती है। मुक्तक कोटि के चम्पू के उदाहरण हैं–करम्भक, विरुद जय–घोषणा आदि।

इससे स्पष्ट है कि चम्पू काव्य गद्य–पद्यमय, साङकता सोच्छ्वास उक्ति–प्रत्युक्ति (आकाशभाषित) का न होना विष्कम्भ–शून्य होता है। कहीं–कहीं चम्पू काव्य अंकों और उच्छवासों में विभाजित न होकर स्तबको, आश्वासों, उल्लासों, काण्डों, तरंगों सर्गों आदि में विभाजित होता है जैसे–

(क) उच्छ्वासों में विभाजित चम्पू काव्य–नल–चम्पू, माधव चम्पू, नृसिंह चम्पू, गंगावतरण चम्पू आदि।

(ख) स्तबकों में विभाजित चम्पू काव्य–भागवत चम्पू, भारत–चम्पू, पुरुदेव चम्पू, आचार्य विजय चम्पू, रामानुजचम्पू आदि।

(ग) आश्वासों में विभाजित चम्पू–यशस्तितिलक चम्पू, वसुचरित चम्पू, त्रिपुर विजय चम्पू, कुमार संभव चम्पू आदि।

(घ) उल्लासों में विभाजित चम्पू–यतिराज विजय चम्पू, वाणासुर विजय चम्पू, शिवविलास चम्पू आदि।

(ङ) काण्डों में विभाजित चम्पू काव्य–भोज का रामायण चम्पू, विरुपाक्ष वसन्तोत्सव चम्पू आदि।

Scanned with CamScanner

(च) तरंगों में विभाजित चम्पू–विद्वन्मोदतरंगिणी, गौरी मायूर माहात्म्य चम्पू आदि।
(छ) सर्गों में विभाजित चम्पू–भरतेश्वराभ्युदय, शालिवाहन कथा चम्पू, बाल भागवत चम्पू आदि।
(ज) विलासों में विभाजित चम्पू–रघुनाथ विजय चम्पू, वरदाभ्युदय चम्पू आदि।
(झ) लम्भक में विभाजित–जीवन्धर चम्पू।
(ञ) कल्लोल में विभाजित–आचार्य दिग्विजय चम्पू।
(ट) मनोरथ में विभाजित–भागीरथी चम्पू।
(ठ) बिन्दु में विभाजित–मन्दारमरन्द चम्पू।
(ड) परिच्छेद में विभाजित–रामचन्द्र चम्पू आदि।
(ढ) वर्ण्य विषय पर विभाजित चम्पू–तत्त्वगुणादर्श चम्पू, बैकुण्ठ विजय चम्पू आदि।
(ण) परिच्छेद विहीन चम्पू काव्य–नारायण के चम्पू काव्योंसहित कई अन्य लघु चम्पू काव्य।

इस प्रकार हम देखते है कि चम्पू काव्यों के विभाजन में कवियों की रुचि ही प्रधान रही है। चम्पू काव्य के दो प्रमुख भेद है–**मुक्तक तथा प्रबन्ध**। मुक्तक कोटि के चम्पू में करम्भक विरुद, जयघोषणादि है। करम्भक विविध भाषाओं में निर्मित होता है। आचार्य विश्वनाथ कृत करम्भक **प्रशस्ति रत्नावली** सोलह भाषाओं में निबद्ध है। गद्यपद्य मिश्रित राजस्तुति को **विरुद** कहते हैं। उदाहरण– विरुदमणिमाला। प्रबन्धात्मक चम्पू काव्य को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. सोलहवीं शताब्दी से पूर्व के उपलब्ध चम्पू काव्य।
2. सोलहवीं शताब्दी एवं बाद के उपलब्ध चम्पू काव्य।

1. सोलहवीं शताब्दी से पूर्व के उपलब्ध प्रमुख चम्पू काव्य।

(क) नल चम्पू अथवा दमयन्ती कथा[12] त्रिविक्रमभट्ट कृत नल चम्पू उपलब्ध चम्पू काव्यों में प्रथम एवं ऐतिहासिक सौष्ठव की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कृति है।

(ख) मदालसा चम्पू–त्रिविक्रम भट्ट की यह दूसरी रचना है। यह एक प्रणय गाथा है।

इसी कालाक्रम में सोमदेव कृत **यशस्ति तिलक चम्पू**[13], हरिचन्द्र कृत जीवन्धर, चम्पू, सोड्ढल कृत उदयसुन्दरी कथा, अभिनव कालिदास कृत भागवत चम्पू, अभिनव भारत चम्पू, जैन कवि आशाधर कृत भरतेश्वराभ्युदय चम्पू, कवि कर्णपूर कृत आनन्दवृन्दावन चम्पू, रामानुजार्य कृत श्री रामानुज चम्पू, चिदम्बर कृत भागवत चम्पू, शेषकृष्ण कृत पारिजात हरण चम्पू, सूर्य कवि कृत–नृसिंह चम्पू, श्री कृष्णकवि कृत मन्दार–मरन्द चम्पू, चिरंजीव भट्टाचार्यकृत माधव चम्पू आदि 16वीं शती के पूर्व रचित प्रमुख चम्पू काव्य है।

2. सोलहवीं शताब्दी एवं उसके बाद के उपलब्ध चम्पू काव्य

नारायण भट्ट कृत मत्स्यावतार प्रबन्ध, राजसूय प्रबन्ध, श्री मित्र मिश्र कृत आनन्द कन्द चम्पू, केशवभट्ट कृत नृसिंह चम्पू (प्रहलाद चम्पू) नीलकंठ दीक्षित कृत नीलकंठ विजय चम्पू, भगवन्त कवि कृत उत्तर चम्पू, विरुपाक्षकृत चोल चम्पू, नल्ला दीक्षित कृत 'धर्म विजय चम्पू, शंकरकवि कृत 'शंकर चेतोविलास तथा गंगावतरण चम्पू, रीवां–नरेश विश्वनाथ सिंह कृत रामचन्द्र चम्पू, श्री निवास कवि कृत

Scanned with CamScanner

आनन्द चम्पू, कृष्णानन्द कृत सुदर्शनचम्पू। सदाशिवशास्त्री मुसलगांवकर कृत सिन्देविजयविलास' रघुनन्दन त्रिपाठी कृत हरिहर चरित चम्पू आदि।

वर्तमान युग के प्रमुख चम्पू काव्य में अभिराज राजेन्द्र मिश्र अभिराज चम्पूः राघवेन्द्राचार्य पंचमुखि प्रणति विरुपाक्ष वसन्तोत्सव चम्पू, विट्टल उपाध्याय कृत प्रहलाद चम्पू, रुद्रदेव त्रिपाठी कृत–चतुर्वेद चरित चम्पू, मोहन चरित चम्पूः, राजेन्द्र चन्द्रोदय चम्पू, श्रीनिवास प्रणीत–आनन्दरङगविजय चम्पूः के0 कृष्णजोइसकृत–शरन्नवरात्र चम्पूः, गोविन्द भट्ट कृत सर्वज्ञेन्द्र चम्पू, वनेश्वर विद्यालंकार कृत चित्र चम्पू आदि।

उपर्युक्त विवेचन से यह विदित होता है कि चम्पू काव्य निरन्तर संस्कृत साहित्य जगत में प्रवाहित हो रहा है। प्रारम्भ में जहां चम्पू काव्य का उपजीव्य–रामायण, महाभारत एवं पुराण थे वहीं वाद में चरित, ऐतिहासिक व्यक्ति, यात्रा प्रबन्ध, काल्पनिक कथा, दार्शनिक आदि को आधार बनाकर चम्पू काव्यों का प्रणयन किया जा रहा है। अर्वाचीन संस्कृत साहित्य चम्पू काव्य प्रणयन से ओत प्रोत है 16वीं शताब्दी से पूर्व जहां लगभग 20 चम्पू काव्यों की रचना हुई वहीं उसके पश्चात् 250 से ऊपर चम्पू काव्य लिखे गये। वर्तमान की दृष्टि से चम्पू–काव्यों की संख्या 300 से ऊपर है। इस प्रकार संस्कृत काव्य विधा की यह तरंगिणी सदा अबाध रुप से लोक में प्रवाहित हो रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. काव्य मीमांसा–अध्याय–2
2. नाट्यशास्त्र 32/385, साहित्य दर्पण 6/1
3. द्रष्टव्य–दशरुपम 1/11 पृष्ठ–7
4. काव्यादर्श–1/11
5. अग्निपुराण–337/8
6. अभिराजयशोभूषणम्–पृ0 240
7. वहीं–पृष्ठ 242–श्लोक–132
8. साहित्यदर्पण–6/336
9. काव्यादर्श–1/31
10. काव्य. हेमचन्द्र 8/9 काव्य. वाग्भट प्रथम अध्याय
11. अभिराज यशोभूषणम् पृ0 243, 44
12. चौखम्भा सिरीज बनारस से 1932 में प्रकाशित
13. निर्णय सागर प्रेस बम्बई से पूर्व और उत्तर दो खण्डों में विभाजित

Scanned with CamScanner